शक्तिपात..... श्रीसदगुरुदेव की अद्भुत कृपा

प्रायः गुरु का नाम आते ही हम शक्तिपात के बारे में चिंतन करने लगते हैं। आइये जाने की यह शक्तिपात है क्या? श्रीगुरुदेव द्वारा शिष्य में आध्यात्मिक शक्ति को समावेशित करना शक्तिपात कहलाता है, सद्गुरु की कृपाशक्ति से शिष्य के अन्तस् में आध्यात्मिक ज्योति प्रज्वलित हो जाना शक्तिपात है। श्रीसद्गुरुदेव महाराज अपने शिष्य में गुरुमंत्र द्वारा शक्तिपात करते हैं । यह शक्तिपात एक अद्भुत और अदृश्य क्रिया है, जिसको सिर्फ श्रीसद्गुरुदेव महाराज जानते हैं और सद्गुरु की कृपा से शिष्य इसका अनुभव पाता है।

सद्गुरु का यह शक्तिपातरूपी अनुग्रह वही शिष्य पाता है जो सद्गुरु के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित हो और सद्गुरु की शरण जिसके जीवन का ध्येय हो। ऐसा शिष्य जिसका हृदय सद्गुरु के श्रीचरणों में शरणागति को छटपटा रहा हो। शिष्य की यही छटपटाहट, शक्तिपात ग्रहण करने की पात्रता है। जैसे गैस ईंधन दूर से ही अग्नि को भभक कर पकड़ लेता है, वैसी ही सद्गुरु से एकाकार करने की तड़प से गुरुदेव की कृपा शिष्य में समा जाती है।

सद्गुरु के चरणों में पूर्ण समर्पण ही जीवन का एक मात्र परम उद्देश्य है, क्योंकि आवागमन से मुक्त होकर शिवत्व (ब्रह्म) मे प्रवेश करने का यही एकमात्र उपाय है। सद्गुरु के चरणों में समर्पण से ही आत्मानुसंधान का द्वार खुलता है और आत्मस्थिति प्राप्त होती है। आत्मस्थित होने का रास्ता सिर्फ सद्गुरुदेव ही जानते हैं और इस भेद को गुरुदेव ने पूर्ण समर्पित भाव से अपने सद्गुरुदेव की सेवा करके आशीर्वाद रूप में पाया है। जिसे भी आत्मस्थित होने की अवस्था को प्राप्त करना है तो उसके लिये सद्गुरु की शरण ही एकमात्र मार्ग है, इसके अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं ।

सद्गुरुदेव द्वारा दीक्षा में प्रदान किया गया गुरुमंत्र आध्यात्मिक शक्तिपुंज है। जब सद्गुरु द्वारा यह गुरुमंत्ररूपी शक्तिपात किया जाता है, तो यह शक्ति शिष्य की बिखरी चेतना को संसार से बटोर कर पूर्णरूप से आत्म-केन्द्रित कर देती है। आत्मस्थिति तक पहुँचने का यही उपाय (गुरुमंत्र) है।

जीवन का एक मात्र उद्देश्य है, आवागमन से मुक्त हो कर शिवत्व (ब्रह्म) में प्रवेश करना, और यह तभी संभव है, जब जीव अपनी आत्म स्थिति का अनुसंधान करते हुये उसमे अवलम्बित हो जाता है । मगर आत्मस्थित कैसे होएं इसका रास्ता सिर्फ सद्गुरुदेव महाराज ही जानते हैं । क्योंकि अपने सद्गुरुदेवों की सेवा पूर्ण समर्पित भाव से कर के आशीर्वाद स्वरूप उन्होने इस भेद को पाया है ।

स्वरूप स्थिति में स्थायित्व प्राप्त कर लेना ही मुक्ति का द्वार खुलना है। शक्तिपात एक ऐसी आध्यात्मिक प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से सद्गुरु अपनी शक्तियों को शिष्य में संचरित करते हैं, और शिष्य की सुप्त आध्यात्मिक शक्तियाँ जाग्रत हो जाती हैं। आध्यात्मिक शक्तियों के जागरण से शिष्य की बुद्धि अतीन्द्रिय विषयों को समझने में सक्षम हो जाती है । सद्गुरु की कृपा से शिष्य का यह ज्ञानचक्षु खुलना ही शक्तिपात कहलाता है। स्वरूप स्थिति तक पहुँचने के लिए जो उपाय (गुरुमंत्र) सद्गुरुदेव महाराज बताते हैं, उसे ही शक्ति पात कहते हैं

शक्तिपात करने का सामर्थ्य सबमें संभव नहीं है, जिसका तुणीर सद्गुरु कृपा से भरा हो, जिन्होंने जीवन भर सद्गुरु की सेवा करके अपनी झोली गुरुकृपारूपी पुष्पों से भर लिया हो, जिसका हर पल हर स्वाँस सद्गुरु को समर्पित रहा हो, जिसके हृदय में केवल सद्गुरु ही धड़का हो, ऐसे किसी बिरले के पास ही सद्गुरु की आशीर्वाद से गुरुकृपा के अनंत मेघ प्राप्त होते हैं और ऐसी महान विभूति ही समय के सद्गुरु होते हैं और उनमें ही गुरुकृपा बरसाने का सामर्थ्य होता है।

सद्गुरु आध्यात्मिक शक्ति का भंडार हैं, शिष्य के अन्तस् को अध्यात्म से प्रकाशित करने के लिये गुरुमन्त्र के रूप में सद्गुरु स्वयं ही प्रवेश करते हैं। इस तरह अदृश्य आध्यात्मिक शक्ति से शिष्य सदा लाभान्वितरहता है, यही शक्तिपात है। आत्मस्थिति एक आध्यात्मिक सिद्धि है, जिसे प्राप्त करने के लिए शक्तिपात आवश्यक है और इसके लिए गुरु ही एकमात्र साधन है। गुरुमंत्ररूपी शक्तिपात न होने पर आत्म-सिद्धि नहीं हो सकती। माहात्म्य सूत-संहिता में शक्तिपात की महिमा का वर्णन करते हुए कहा गया है-

तत्वज्ञानेन मायवा बाधो नान्येन कर्मणा। ज्ञ नं वेदान्तवाक्योत्थं ब्रह्मात्मैकत्वगोचरम्।।
तच्च देवप्रसादेन गुरौः साक्षात्रिनीक्षणात्। जायते शक्तिपातेन वाक्यादेवधिकारिणाम्।।

अर्थात, तत्वज्ञान के अतिरिक्त अन्य किसी उपाय से माया का ह्रास नहीं हो सकता। यह तत्वज्ञान ब्रह्म और आत्मा की अभेद सिद्धि का निरूपण करने वाले वेदान्त वाक्यों से प्राप्त होता है। इसका अधिकार सद्गुरु द्वारा शिष्य को शक्तिपात से ही दिया जाता है।

संत ज्ञानेश्वर ने लिखा है कि शक्तिपात होने पर, रहता तो वह जीव ही है परंतु महेश्वर के समान हो जाता है। गुरुकृपा से ही आध्यात्मिक शक्ति का जागरण होता है। स्वरूप स्थिति में स्थायित्व प्राप्त करना ही मुक्ति द्वार तक पहुंचने का संकेत है। इस स्वरूप स्थिति तक पहुंचने का प्रामाणिक उपाय गुरुमंत्र ही है, गुरुमंत्र ही शक्ति है और मंत्रदीक्षा शक्तिपात है। इस कृपा अथवा भगवद्नुग्रह को ही शक्तिपात कहा जाता है।

सद्गुरु सर्वतत्त्ववेत्ता और अध्यात्म विद्या के जानने वाले होते हैं। 'मालिनी विजय' में भी कहा है- *स गुरुमंत्समः प्रोक्तो मंत्रवीर्य प्रकाशकः।*

गुरुकृपा से शक्तिपात हो जाने पर यौगिक क्रियाओं की अपेक्षा नहीं रहती, सभी अपेक्षित क्रियाएँ साधक की प्रकृति के अनुरूप स्वतः होने लगती हैं। प्रबुद्ध कुंडलिनी ब्रह्मरन्ध्र की ओर प्रवाहित होने के लिए छटपटाती है, जिससे सभी क्रियाएं स्व-संचालित रहती हैं। जिन्होंने ने कुण्डलिनी जागरण से सम्बंधित कोई अभ्यास भी न किया हो और ना ही विशेष अध्ययन किया हो, उनमें भी सद्गुरुकृपा प्रसाद से दक्ष सिद्धों जैसी यौगिक क्रियायें घटित होने लगता है अर्थात क्रियात्मक ज्ञान भी स्वत: शिष्य में सद्गुरु द्वारा शक्तिपात करने पर होने लगता है। शक्तिपात से जब शिष्य में गुरु-शक्तियाँ प्रवेश करती हैं, तो ज्ञान का प्रकाश स्वत: ही सर्वत्र फैलने लगता है और गुरु की कृपा से शिष्य में संबन्धित योग्यता का उदय एवं चक्र जागरण अथवा कुंडलिनी जागरण आदि खुद ब खुद होने लगता है ।

शक्तिपात के द्वारा साधक के अन्तस् में क्रांतिकारी परिवर्तन आते हैं, उसमें भगवद्भक्ति का विकास, चिदात्मा का प्रकाश होता है, मंत्र सिद्धि होती है । शक्तिपात के साथ-साथ हृदय में प्रेम व श्रद्धा ऐसे चले आते हैं जैसे पुष्प के साथ सुगंध। जिसे सद्गुरु से शक्तिपात प्राप्त हुआ, ऐसे बड़े भाग्यवानों की बुद्धि में शास्त्र स्वयं अपना गुह्य ज्ञान और अर्थ प्रगट करते हैं। शक्तिपात हो जाने पर ज्ञानतत्त्व आत्मसात् होता

है, शरीर भाव जाता रहता है और शिवत्व लाभ होता है। कृष्ण के शक्तिपात से किस तरह अर्जुन को आत्मानुभूति हुई, इसका हृदयानुग्राही वर्णन ज्ञानेश्वरी गीता में किया गया है। प्रारब्ध कर्म समाप्त हो जाते हैं, उनके बिना भोगे ही उसकी मुक्ति हो जाती है। ऐसा तब तक होता रहता है, जब तक शरीर रहता है। सुख दुःख की परिस्थिति में भी आनंद की मुद्रा रहती है।

शास्त्रों में शक्तिपात के लक्षण इस प्रकार से वर्णित किये गये हैं:-

देहपातस्तथा कम्प परमानन्दहर्षणे। स्वेदो रोमांच इत्येतच्छक्तिपातस्य लक्षणम्।।
शिष्यस्य देहे विप्रेन्द्राः धरण्या पतितेसति। प्रसादः शांकरस्तस्य द्विज संजात एव हि।।
यस्य प्रसादः संजातो देहपातावसानकः। कृतार्थ एव विप्रेन्द्रा न स भूयोऽभिजातयते।।

शक्तिपात होते ही शरीर भूमि पर गिर जाता है, कंपन होने लगते हैं, मन में अपार प्रसन्नता का उदय होता है और परम आनंद की प्राप्ति होती है, शक्तिपात (गुरुमंत्र) होते ही अज्ञानता का नाश और ज्ञान का उदय होता है। शक्तिपात से मन में विवेक के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न होती है, सद्गुरु की प्राप्ति की इच्छा जागृत होती है। तत्त्व को जानने की उत्कंठा ही इसका लक्षण है। इच्छा होने पर सद्गुरु की प्राप्ति भी होती है। गुरु की प्राप्ति होने पर जिज्ञासाओं का शमन होता है तथा शिष्य मुक्ति पथ की ओर अग्रसर होता है।
गीता के शब्दों में:

यथैधं स समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन। ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात् कुरुते तथा।।
अर्थात् हे अर्जुन ! तेजी से जली हुई अग्नि जिस तरह ईंधनों को जलाकर भस्म कर देती है, उसी प्रकार ज्ञानरूपी अग्नि भी समस्त कर्मों को भस्मसात् कर दिया करती है।

*********श्री सद्गुरु-शरणम् *******